RESEARCH DIRECTIONS

ISSN: 2321-5488
IMPACT FACTOR : 3.5003 (UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 1 | JULY - 2017

समकालीन कथा साहित्य का एक परिदृश्य

प्रा. गिरीषकुमार एस.किशोरी
श्री. एस.आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज
सींगवड.

प्रस्तावना-

हिन्दी कथा साहित्य के इतिहास में सातवें दशक के बाद केकथाकारों की मुख्यधारा 'समकालीन कथा साहित्य' के नाम सेअभिहित की गयी है। हिन्दी कथा साहितय के समकालीन परिदृश्यको हम दो दृष्टियों से अवलोकन कर सकते हैं– एक तोसमकालीन हिन्दी कथा साहित्य की गुणवत्ता से या कहे किदशा–दिशा की दृष्टि से और दूसरे उसके परिवेश की दृष्टि से।यह उल्लेखनीय तथ्य है कि हिन्दी कथा साहित्य का संसार याक्षितिज बहुत विस्तारित है। एक ओर देश के भीतर हिन्दी औरहिन्दीतर प्रदेशों में लिखे जाने वाले कथा साहित्य, दूसरी ओर देशके बाहर प्रवासी और भारतवंशी लेखकों द्वारा लिखा जाने वाले कथासाहित्य का परिदृश्य विद्यमान है। इसके बावजूद भी हम समकालीनकथा साहित्य में स्त्री एवं पुरुष लेखकों के साहित्य का भी अलगढंग से मूल्यांकन कर सकते हैं।

सातवें दशक के मध्य से भारतीय जनमानस में प्रतीक्षा का भावसमाप्त हो गया, इसके स्थान पर मोहभंग और सामाजिक परिवर्तनके लिए आतुरता–अधीरता का भाव पैदा हुआ। समकालीन महिलाएवं पुरुष कथाकारों ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वार्थप्रेरित ताकतों के विरुद्ध लड़ने हेतु अपनी कहानियों एवं उपन्यासोंको प्रगतिशीलता से आच्छादित किया। सभी ने अपनी तर्कपूर्ण बातरखने का साहस दिखाया। यही कारण है कि उनके कथा साहित्यमें घोर विद्रोह के दहकते शोषित, पीड़ित, जन समुदाय केज्वालामुखी को भूखण्ड के भीतरी जलन को अभिव्यक्ति मिली।व्यापक मोहभंग और व्यवस्था का शिकार हुआ आम आदमी केअन्दर की पीड़ा, तनाव, विवशता, अबोधता, सहिष्णुता अकेलेपन,हताशा, निराशा, घर–परिवार, खीझ और गुस्से को उसके कटुअनुभवों को समग्रता में उद्घाटित समकालीन कथा साहित्य मेंकिया जाता रहा है। आज के दौर की समकालीन कथा साहित्य वही नहीं है जो नवें–8वें दशक का कथा साहित्य है। सामाजिक वराजनीतिक परिवर्तनों– आजादी के बाद भारतीय संविधान का लागूहोना, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, निजीकरण, पूँजीकरणनवउपविशेवाद की आर्थिक नीतियों का लागू होना, दिसम्बर 1992में पारित संशोधन के 73वें संशोधन के बाद ग्रामीण स्त्रियों कोतैंतीस प्रतिशत आरक्षण मिलना, 'हिन्दू कोड बिल' का पारितहोना–से भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में जबर्दस्त परिवर्तनआया जिसका प्रभाव कथा साहित्य में भी दिखायी देता है।

समकालीन कथा साहित्य वर्तमान सामाजिक परिवेश से जूझतेव्यक्ति के दुखों का साहित्य है वह जिन्दगी के सही अर्थों में जीनेका पर्याय बन गया और बहुत ही बेडौल टुकड़ों में बँटी आदमी कीजिन्दगी को जोड़ने का प्रयास करता है। यथा समकालीन कथासाहित्य सुनिश्चित सामाजिक बदलाव के लिए जनसंघर्ष के प्रतिपूर्णसमर्पित है। इस दौर की महिला कथाकार मुक्ति का मार्ग तलाशतीआधुनिक स्त्री–जीवन के विविध पहलुओं को परत दर परत उकेरतीहैं। चाहे वह स्त्री की 'आर्थिक स्वायत्तता' का प्रश्न हो, या'यौन–सुचिता' का प्रश्न हो या 'स्त्री के अन्तःसम्बंधों' का प्रश्न हो,अथवा उनकी स्वतंत्र सत्ता एवं अस्तित्व का प्रश्न हो, चाहे 'पुरुष केहवस का शिकार होती स्त्री का' प्रश्न हो, या आधुनिक स्त्री काप्रतिक्रियात्मक आक्रोश हो। महिला लेखिकाओं ने सर्जनात्मक स्तरपर 'पुरुष–समाज' की स्त्री–विरोधी मूल्य–मर्यादाओं, मिथकों,आदर्शों एवं विधि–निषेधों आदि की कड़ी आलोचना करते हुए उन्हेंतोड़ने के लिए अपने कथा साहित्य में अपने मन तथा विचार केअनुकूल 'स्त्री–पात्रों' को गढ़ा है और लेखन में उन्हें प्रस्तुत करनेका पूरा प्रयास किया है।

नारी विषयक विचारों के आलोक में प्रभा खेतान का विचारउल्लेखनीय हो जाता है– ''यह सच है कि स्त्री के बारे में इतनाप्रामाणिक विश्लेषण एक स्त्री ही दे सकती है। बहुधा कोई पाठिकाजब अपने बारे में पुरुष के विचार और भावनाएँ पढ़ती है तब उसेलेखक की नीयत पर कहीं संदेह नहीं होता। 'अन्ना करैनिना' पढ़तेहुए या शरत्चन्द्र का 'शेष प्रश्न' पढ़ते हुए हम बिल्कुल भूल जाते हैंकि इस स्त्री–चरित्र को पुरुष गढ़ रहा है और यदि लेखक याद भीआता है तो श्रद्धा से मस्तक नत हो जाता है। पर

यह बात मन मेंआती है कि यदि अन्ना का चरित्र किसी स्त्री ने लिखा होता, तोक्या वह अन्ना को रेल के नीचे कटकर मरने देती ? यदि देवदासकी पारो को स्त्री ने गढ़ा होता, तो क्या यूँ घुट–घुट कर मरती ?इसमें से किसी महान लेखक पर मेरा कोई आक्षेप नहीं, पर कविहोने की कल्पना कभी–कभी दूसरी ओर भी मुड़ती है।

समकालीन कथा साहित्य की प्रवृत्तियों को समझने में मधुरेश कायह कथन महत्वपूर्ण माना जाता है– ''समकालीन कहानी जहाँ एकओर राजनीति की इकहरी और यांत्रिक निष्कर्षों वाली सोच से मुक्तहुई है। वहीं वह समाज व राष्ट्र के संदर्भों में अधिक गंभीर औरबेबाक सवालों के सामने खड़े होने की कोशिश कर रही है। एकओर यदि वह स्थितियों की संवेदन शून्यता की गहरी पड़ताल मेंप्रवृत्त है तो दूसरी ओर वही वह सामंती अन्तर्विरोधों से लेकर स्त्रीउत्पीड़न और धार्मिक उन्माद की आँधी में साधारण आदमी कीनियति को भी परिभाषित करना चाहती हैं। आज की कहानी कीमूल चिन्ता किसी न किसी स्तर पर मनुष्य की मुक्ति से जुड़ी है।इसमें एक ओर जहाँ भारतीय समाज में हाशिये पर जीवन जी रहेलोगों की अभावों और विविध रूपों में उत्पीड़न से मुक्ति शामिल है,वहीं पुरुष वर्चस्व वाले समाज में स्त्री की अपनी अस्मिता और मुक्तिका सवाल भी उतना महत्वपूर्ण है।

समकालीन नारीवादी चिन्तक आशारानी व्होरा लिखती हैं कि–

''सृष्टि रचना में स्त्री का योगदान पुरुष के समान योगदान से कहींज्यादा है, वह मानव की जन्मदात्री है, फिर संसार के विकास मेंउसका योगदान क्यों नगण्य रहा ? आज की समानता कीभागीदारी केवल विधान के कागजों पर है, व्यवहार में इस आधीआबादी का स्थान अल्पसंख्यकों के समान ही है। ऐसा क्यों ? इसी वजह से सवाल उठते हैं कि क्या वह अल्पसंख्यक है ? क्या वह दूसरे दर्जे की इन्सान है ? क्या वह बुद्धि या अन्य मानवीय गुणों मेंपुरुषों से हीन है ? क्या वह पुरुष–पति का मन बहलाव करने की वस्तु है ? उसका अपना निजी अस्तित्व अपनी निजी पहचान कहाँ है ? निजी तौर पर विश्वहित में उसकी कोई अन्य भूमिका क्यों नहीं रही ? ये बुनियादी सवाल आज विकसित, अविकसित, विकासशीलसभी देशों में समान रूप से उठाए जा रहे हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की महिला कथाकारों ने अपने परिवेश से प्रभावित होकर अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में उन विचारों को प्रतिस्थापित करना शुरू किया है जो उनको उन्नति की ओर अग्रसर करते हैं। उनके कथा साहित्य में वे विचार ही प्रबलता के साथ अभिव्यक्ति पा रहे हैं जो उन्हें विकास के रास्ते पर ले जाने वाले है। आर्थिक स्वावलंबन न होने के कारण समाज में स्त्रिों को वेश्या, कॉलगर्ल, चरित्रहीन, रखैल, भ्रष्टाचारी, दासी, अनुचरी आदि मजबूरन बनाना पड़ता है।

यही देह व्यापार नारी के स्वाभिमान और सम्मान को गिरा देता है। समकालीन कथा लेखिकाओं– मन्नू भण्डारी, रजनी पनिकर, विजय चौहान, ऊषा प्रियंवदा, सोमावीरा, सुनीता, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, शशिप्रभा शास्त्री, दीप्ति खण्डेलवाल, राजी सेठ, मालती जोशी, शांता सिन्हा, मेहरुन्निसा परवेज, कृष्णा अग्निहोत्री, कुंकुम जोशी, निर्मला ठाकुर, ऊषा किरण खान, सूर्यबाला, क्रांति त्रिवेदी, मंजुल भगत, मृणाल पाण्डेय, बिन्दु सिन्हा, निरूपमा सेवती, ज्योत्ससना मिलन, सुकीर्ति गुप्ता, देवकी अग्रवाल, ऋता शुक्ल, मणिका मोहिनी, कुसुम अंसल, अचला नागर, सुधा अरोड़ा, इन्दिरा मित्तल, नासिरा शर्मा, चन्द्रकांता, पद्मांशा, मोना गुलाटी, शुभा वर्मा, निर्मला वाजपेयी, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, कमल कुमार, मैत्रेयी पुष्पा, अर्चना वर्मा, अलका सरावगी, लवलीन, जया जादवानी, उर्मिला शिरीष, अरुणा सीलश आदि ने नारी अंतर्मन को झांककर उसके अछूते रहस्यों को उद्घाटित किया, साथ ही नये विषय भी उठाए है।

सभी कथा लेखिकाएं नए भावबोध के साथ कहानी और उपन्यास को एक सांस्कारित स्वर देने में भी प्रयत्नशील हैं। आदि कथाकारों ने अपने कहानियों एवं उपन्यासों में आर्थिक समस्या के समाधान हेतु नारी को स्वतंत्र अस्मिता, अस्तित्व, पहचान, सम्मान, गौरव अधिकार एवं प्यार आदि देकर नारी विकास हेतु नई दिशा एवं दशा प्रदान करने में एक सक्षम एवं गौरवमयी पक्ष व पहल है। संदर्भित इक्कीसवीं सदी के कहानियों एवं उपन्यासों में समय, संवेदना एवं समाज की प्रस्तुति समसामयिक युगीन परिस्थितियों की मांग के अनुकूल ही उसे अभिव्यक्ति का प्रयास उनकी रचनाओं में दिखायी देता है। इस दौर के कथा साहित्य स्थापित परम्परागत व्यवस्था के दरवाजे पर प्रतिरोध की दस्तक देते हैं और विकास के अभियान में अवरोध बने हुए समाज के पारम्परिक ढाँचे को तोड़ने की हिमायत करते हैं इसलिए कि विकास का रास्ता प्रशस्त हो सके। ताकि आज की नारी अपनी वांछित दुनिया पा सके।

संदर्भ

1. तद्भव, संपा. अखिलेश, अभय कुमार दूबे, अंक–22, जुलाई–2010, लखनऊ, पृ. 75
2. आधुनिकता पर पुनर्विचार, अजय तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012, पृ. 197
3. वही, पृ. 197
4. हिन्दी का गद्य साहित्य, रामचन्द्र तिवारी, पृ. 122